महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अन्तर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

घोषणा-पत्र/ प्रमाण-पत्र

मैं **रत्नेश कुमार यादव** घोषणा करता हूँ कि संस्कृति विद्यापीठ के विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के एम.फिल. सत्र- 2015-16 की उपाधि के लिए, पाठ्यक्रम संबंधी आवश्यकता की पूर्ति हेतु **'मधेशी समस्या और भारत-नेपाल संबंध'** विषय पर लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह लघु शोध-प्रबंध मेरे मौलिक कार्यों पर आधारित है तथा मेरे संज्ञान में इसे अंशतः या पूर्णतः इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य संस्थान में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्रस्तुत शोध-कार्य को प्रमाणित करते हुए मूल्यांकन हेतु अग्रेषित किया जाता है।

शोध-निर्देशक

डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी

विभागाध्यक्ष

विकास एवं शांति अध्ययन विभाग

दिनांकः

स्थानः

शोधार्थी

रत्नेश कुमार यादव

पंजीकरण संख्या: 2015/03/222/010

पोस्ट बॉक्स सं. -16, गांधी हिल्स - वर्धा, पिन- 442 005 (महाराष्ट्र) फोन : 07152-251661, फैक्स : 07152-230903

ई-मेंल : info@hindivishwa.org, hindiuni_wda@sancharnet.in वेबसाइट : www.hindivishwa.org

आभार

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष व मेरे शोध-निर्देशक डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी के कुशल निर्देशन के बिना पूरा कर पाना संभव नहीं था। आपके सहयोगपूर्ण व्यवहार की बदौलत ही मैं इस विषय की प्राक्कल्पना को विकसित कर पाया। शोध की पूर्णता हेतु समय-समय पर मिले बहुमूल्य सुझाव एवं वात्सल्यपूर्ण सहयोग के लिए मैं अपने शोध-निर्देशक के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. राकेश कुमार मिश्र, डॉ. धूपनाथ प्रसाद, डॉ. मनोज कुमार राय व डॉ. चित्रा माली के सानिध्य में रहकर लगातार कुछ न कुछ सीखने का अवसर तथा समय- समय पर उचित निर्देशन प्राप्त हुआ, इसके लिए मैं आप सब का ऋणी व हृदय से आभारी हूँ। मैं हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के सहायक प्रोफेसर डॉ. अमित राय का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर उचित मार्गदर्शन दिया।

मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के परम आदरणीय गुरुवर डॉ. अरुण कुमार श्रीवास्तव, डॉ. शिव बहादुर सिंह, डॉ. स्वाति नन्दा, प्रो. कौशल किशोर मिश्र और डॉ. राखी सिंह के प्रति भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही साथ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के नेपाली अध्ययन केंद्र के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जहां से मुझे आवश्यक शोध-सामग्री प्राप्त हुई।

मेरे शोध-क्षेत्र के भ्रमण व अवलोकन के दौरान मिले इस विषय के विशेषज्ञ डॉ. आनंदस्वरूप वर्मा, महंत ठाकुर (अध्यक्ष, त.म.लो.पार्टी नेपाल), उपेन्द्र यादव (अध्यक्ष, संघीय समाजवादी फोरम पार्टी), बृजेश कुमार गुप्त (सांसद कपिलवस्तु-3), अमरेन्द्र यादव के प्रति भी तहे दिल से आभार व्यक्त करता हूँ। क्योंकि इन लोगों के सहयोग के अभाव में नेपाल में रहकर तथ्य संकलन करना अत्यंत ही दुष्कर कार्य था।

मैं अपनी पूज्य माता श्रीमति आशा देवी व पूज्य पिता श्री बद्री प्रसाद एवं चाचा विनय यादव, अग्रज श्री अमरेश यादव, श्री बृजेश यादव एवं समस्त परिवारजनों का ऋणी व हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे सदैव उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया।

इसके बाद इस शोध कार्य के दौरान जिन व्यक्तियों ने मेरी मदद की उन सभी व्यक्तियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिसमें बड़े भाई व मित्र श्रीकांत जायसवाल, अभिषेक त्रिपाठी, सुनील कुमार भाष्कर, विजय कन्नौजिया, शिव गोपाल यादव, बृजेश यादव, अंबुज शुक्ला, रोहित शर्मा, ईश शक्ति सिंह, कमल कुमार, रजनीश अग्रहरी, जितेन्द्र कुमार स्नेहमयी हुस्न तबस्सुम ने मेंरा सहयोग किया। मित्रों में शैलेन्द्र गौतम, प्रिंस कुमार सिंह, निर्भय सिंह, मुकेश कुमार, इंतख़ाब अंसारी, मो. एहसान, अखिलेश सिंह, वीरेंद्र गाँधी, आशुतोष विश्वकर्मा एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में अध्ययनरत सहपाठियों ने मुझे अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया। अतः मैं आप सबके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्णता में मैं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रति शुक्रगुजार हूँ जहां से मुझे आर्थिक सहायता मिलती रही, बिना अर्थ के नेपाल में जाकर इस शोध को पूरा करना असंभव था। साथ ही विभिन्न पुस्तकालयों, पत्र-पत्रिकाओं, भारत सरकार विदेश मंत्रालय व नेपाल स्थित भारतीय दूतावास के अधिकारियों आदि ने जो विपुल सहयोग दिया है, मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद

भूमिका

आज का युग अन्तरराष्ट्रीयता का युग है। कोई भी राष्ट्र अपने आप में अलग रहकर अधिक दिनों तक अपना अस्तित्व क़ायम नहीं रख सकता है। बावजूद इसके बहुत से देशों में अपेक्षित सहयोग और मैत्री का नितांत अभाव है। संसार के दो विश्व युद्ध इसके प्रबल प्रमाण है। और अभी निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता है कि इस धरती पर युद्ध-विभीषिका का आतंक सदा-सर्वदा के लिए समाप्त हो गया है। एक समय था जब अंतरराष्ट्रीय राजनीति से भारतीयों का सीधा संबंध नहीं था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व अंग्रेज अपनी इच्छानुसार, लाभ की दृष्टि से पराधीन भारत को विश्व-राजनीति के रंगमंच पर कठपुतली की तरह नचाया करते थे। अब हमारा उत्तरदायित्व बढ़ गया हैं और पराधीनता से मुक्त होकर हम विश्व राजनीति में दिलचस्पी लेने लगे हैं और यह अनिवार्य भी है।

इस शोधकार्य के द्वारा इस बात पर ध्यान केन्द्रित किया गया है कि भारत-नेपाल संबंध और उसके इतिहास का अध्ययन किया जाए। नेपाल के साथ भारत के संबंध अति प्राचीन है। दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक एकरूपता है जिस कारण दोनों ही देशों के रिश्तों में सदैव मधुरता रही है। दोनों पड़ोसी देशों के नागरिक बिना किसी पाबंदी के एक-दूसरे के यहाँ आते जाते हैं। यह प्रावधान भारत-नेपाल सीमा पर बसे लोगों के लिए जीवन रेखा साबित हुआ है। इतिहास के पन्नों को टटोलें तो दोनों देशों के बीच 1950 में हुए शांति व मैत्री समझौते ने इस मजबूत रिश्ते की नींव रखी थी। भारत और नेपाल केवल पड़ोसी देश ही नहीं है, बल्कि इनमें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक समरूपता है जो इनको जोड़कर रखती है। नेपाल भारत का संबंध रोटी-बेटी का है, सदियों से रिश्तों की इस परंपरा को दोनों देशों ने निभाया है। भारत नेपाल के बीच कोई सामरिक समझौता नहीं है लेकिन नेपाल पर किए गए किसी भी आक्रमण को भारत कभी बर्दास्त नहीं कर सकता। 1950 से लेकर अब तक नेपाल में जो भी समस्याएँ आईं भारत ने उनको अपना माना और भरपूर साथ दिया। दोनों देशों के रिश्तों में कभी मधुरता व कभी कड़वाहट रही है। बावजूद इसके परंपरा का संबंध दोनों देशों के संबंधों में मिठास घोलता आया है।

भारत-नेपाल संबंधों की शुरुआत साल 1950 को मैत्री और शांति संधि के साथ हुई थी। यही संधि दोनों देशों के बीच व्यापारिक गठजोड़ भी बढ़ाती रही। साल 1951 जब नेपाल में राजनीतिक विवाद गहराया तो महाराजा त्रिभुवन दिल्ली पहुंचे तब तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू ने मध्यस्थता करते हुए उन्हें पूरा सहयोग दिया। ये वो वक्त था जब नेपाल ने भारत से सैनिक सहायता की माँग की, सेना एवं प्रशासन के पुनर्गठन के लिए सहयोग माँगा। भारत ने नेपाल को हर तरह की सहायता देकर वहाँ स्थायित्व लाने का प्रयास किया तब से लेकर अबतक भारत में जितनी सरकारें आई सबका रुख नेपाल को लेकर सहयोगात्मक रहा भारत के मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नेपाल यात्रा ने इस संबंध को नई दिशा प्रदान करने की कोशिश की वहाँ आए महाविनाशकारी भूकंप में भारत से मिली मदद को भी नेपाल कभी भूल नहीं सकता लेकिन मधेशियों के मुद्दे पर दोनों देशों के रिश्तों में कड़वाहट आ गई। ऐसे में नेपाल के भूतपूर्व प्रधानमंत्री व वर्तमान प्रधानमंत्री की यात्रा द्वारा रिश्तों की दूरियों को भी कम करने की उम्मीद जगी है। खास

बात ये है की नेपाली प्रधानमंत्री ने भारत यात्रा से पहले भारत-नेपाल सीमा पर नाकाबंदी कम करके एक नई उम्मीद जगाई। मधेशी भी इस यात्रा से काफी उम्मीदें लगाए बैठे हैं।

मधेशी समुदाय की कुछ समस्याएँ हैं जिस कारण वे आंदोलित हो उठे हैं जिनमें कुछ प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं- भाषाई, नागरिकता विषयक, प्रवासन संबंधी, भूमिअतिक्रमण, आर्थिक, राजनीतिक उपेक्षा और असमानता जैसी समस्याओं की वज़ह से मधेशी आंदोलन का विकास हुआ जिससे भारत-नेपाल की विदेश-नीति प्रभावित हुई। इस अध्ययन में मधेशी समुदाय की प्रमुख समस्याएँ तथा उनके निराकरण का मार्ग ढूँढने का प्रयास किया गया है। साथ ही इसका भारत-नेपाल संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव का अवलोकन किया गया है।

मधेशी समस्या और भारत-नेपाल संबंध

सारांश :

मुख्यबिंदु : *मधेशी समस्या, आंदोलन, भारत-नेपाल संबंधों पर प्रभाव, समस्या समाधान व सुझाव, शांति-अशांति प्रभाव,*

भारत-नेपाल दक्षिण एशिया के दो पड़ोसी राष्ट्र है। इन दोनों राष्ट्रों के पारस्परिक संबंध आदिकाल से ही घनिष्ठ हैं। नेपाल का अधिकांश भाग मध्य हिमालय की बर्फ़ीली पर्वतमालाओं से घिरा हुआ है परंतु इसका दक्षिणी भाग तराई प्रदेश (मधेशीय समुदाय) है। दोनों देश शताब्दियों से दक्षिण एशिया के हिंदू बाहुल्य राष्ट्र रहे हैं। यद्यपि वर्तमान समय में भारत एक सर्वधर्म समभाव में विश्वास करने वाला राष्ट्र है। भारतीय स्वतंत्रता के बाद भारत-नेपाल संबंध सामान्य संबंधों के रूप में विकसित हुआ। वर्तमान में दोनों पड़ोसी संप्रभु राष्ट्रों के मध्य मित्रवत संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया जा रहा है। किन्तु कुछ मामलों को लेकर विवाद बना हुआ है, नेपाल के संविधान में तराई प्रदेश के मधेशी समुदाय को दूसरे दर्जे की नागरिकता देने के कारण समकालीन विवादों में मधेशी आंदोलन प्रमुख है। इसके कारण भारत-नेपाल संबंध प्रभावित हुआ, इसका प्रमुख कारण नेपाल शासन का यह मान लेना कि भारत नेपाल के घरेलू राजनीति में हस्तक्षेप कर रहा है। नेपाल को भारत के ख़िलाफ भड़काते हुए चीन को भी देखा गया है।

वर्तमान समय में जहाँ नेपाल में भारत के प्रति अविश्वास बढ़ रहा है, यदि नेपाल को सचमुच अच्छा गणतंत्र बनना है तथा संपूर्ण जनता का विश्वास जीतना है, तो चीन की तुलना में लोकतांत्रिक व बहुलतावादी भारत उसका ज्यादा अच्छा मित्र व सहयोगी होगा। इस शोध का प्रमुख अभिप्राय नेपाल के तराई प्रदेश में मधेशी समुदाय की समस्या को जानना व मधेशी आंदोलन के कारण भारत-नेपाल संबंधों पर प्रभाव का अध्ययन करना व नेपाल में मधेशी आंदोलन की समस्या समाधान हेतु मार्ग प्राप्त करना प्रमुख उद्देश्य था। प्रस्तुत शोध में लिए गए साक्षात्कार में ज़्यादातर साक्षात्कारकर्ताओं का मानना है कि जब भारत मधेशी समस्या को हल करने की बात करता है तब नेपाल शासन हस्तक्षेप मान बैठती है। इस संदर्भ में साक्षात्कारकर्ताओं का मत है कि हम इसे हस्तक्षेप नहीं मानने है। वे बताते हैं कि जब भी किसी पड़ोसी देश में असामान्य स्थिति पैदा होगी तो उसके पड़ोसी देश को चिंता होना स्वाभाविक है। वहीं चिंता भारत को होती है। फिर भारत-नेपाल के संबंध अन्य देशों से अलग है, क्योंकि यहाँ की सीमा खुली है। इस समस्याओं से निजात पाने के लिए क्या संभावनाए हो सकती है ? इस शोध द्वारा प्राप्त परिणामों से पता चलता है कि भारत-नेपाल मधेशी समुदाय के आंदोलन के कारण जो समस्या पैदा हो रही है। उसे द्विपक्षीय वार्ता द्वारा सुलझाया जा सकता है। इस समय भारत को नेपाल के संविधान में संशोधन तथा यद्यपि मधेशी समाज की मांगों को नेपाल के संविधान में उल्लिखित कर आंदोलन को समाप्त किया जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के **अनुच्छेद 11 की धारा 73e** द्वारा जनमत संग्रह के माध्यम से शांतिपूर्ण तरीके से इस समस्या का हल निकालने की कोशिश किया जाना चाहिए। व सभी राजनीतिक शक्तियों को समग्र शांति समझौता लागू करने से ही समाधान निकलेगा।

प्रस्तुत शोध-विषय की प्रासंगिकता यह है कि वर्तमान समय में भारत-नेपाल के मध्य जो मधेशी समस्या है उसके समाधान में प्रस्तुत शोध एक सहायक के रूप में कार्य कर सकता है। यह भारत-नेपाल के लिए भावी संबंधों में मधुरता स्थापित करने में सहायक होगा।

Madheshee problam and India-Nepal Relations

Research Abstract

India and Nepal are two neighboring nations of South Asia. These two nations have closer mutual relations from the beginning. Most of the part of Nepal is surrounded by freezing mountain series of Central Himalaya, but its southern part is tarai State (Madhesheeya community). Both countries are predominantly Hindu Nation of South Asia from centuries. Although at the present time India believes in all religion. India and Nepal relations developed as normal relations after Indian independence. Now, both neighboring sovereign nations are attempting to create their friendly ties more robust. But still there is some area of dispute, in the Constitution of Nepal for giving the second class citizenship to madheshee community of Terai state, the madheshee movement is one of the contemporary disputes for the same. This causes the India-Nepal relations, affected Nepal leading cause of it in the domestic politics of Nepal to assume that India is interfering. India, China to Nepal conceded Stoke has also been seen.

At the present time mistrust is growing in Nepal towards India, Nepal to become a Republic, to win the confidence of all citizens, democratic and pluralist India will prove his good friend and ally in comparison to china. The intent of this research is to know the problems of madheshee in Terai state and the impact of madheshee movement upon the mutual relation of India and Nepal and also to find a way of solution toward madheshee community in Nepal. Present study the most of the participants believe that whenever India talks for the solution of madheshee problem, rulers of Nepal take it as an interference values. In this context the interviewers acknowledge that they do not take it as an intervention. They

point out that whenever someone would create the unusual situation in the neighbouring country neighboring country is bound to be worried. There are concerns of India. Then, India-Nepal relationship is different from other countries, because their range is open. To get around this issues do need? The results obtained by this research shows that the problems of India-Nepal due to movement of the madheshee can be resolved by bilateral talks. At this time, although the Constitution of Nepal and India madheshee community in Nepal's Constitution demands of movement can be eliminated. Section 73e of Para 11 of the United Nations through a referendum by peaceful ways to solve this problem try to remove should be. And all political powers by applying the overall peace agreement will yield the same solution.

The relevance of the present research-topic is that it can work as assistant in the problems of madheshee between India-Nepal. This will prove a good assistance in India-Nepal cozy relations for boosting and to set in.

अनुक्रमणिका

अध्याय 1- प्रस्तावना एवं शोध-प्रविधि **(1-15)**

1.1 : शोध-कार्य की पृष्ठभूमि
1.2 : शोध-प्रविधि एवं सीमाएं
1.3 : साहित्य पुनरावलोकन
1.4 : सैद्धांतिक एवं प्रयोगिक अध्यायों का शोध-सार

अध्याय 2 भारत-नेपाल संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि **(16-27)**

2.1 : भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात भारत-नेपाल संबंध

2. 2 : भारत-नेपाल संबंधों में वर्तमान भारत सरकार की विदेश-नीति

2. 3 : अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भारत-नेपाल की भूमिका

अध्याय 3 मधेशी समुदाय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि **(28-62)**

3.1 : मधेशी कौन थे ?

3.2 : नेपाल की समस्या

3.3 : मधेशी समुदाय की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति

3.4 : मधेशी समुदाय की आर्थिक स्थिति

3.5 : मधेशी समुदाय की राजनीतिक पृष्ठभूमि

3.6 : नेपाल जनमुक्ति आंदोलन की प्रमुख पार्टियां

अध्याय 4 : मधेशी समुदाय की समस्या **(63-69)**

खंड (क)

4.1 : संविधान निर्माण की प्रक्रिया

4.2 : अप्रवासन समस्या तथा मधेशियों पर इसका प्रभाव

4.3 : राजनीतिक भेदभाव और असमानता

अध्याय 4 : मधेशी आंदोलन के कारण भारत-नेपाल संबंधों पर प्रभाव (70-96)

पद विश्लेषण परिणाम, खंड (ख)

4.4 : तथ्यों का पद विश्लेषण : वर्गिकरण एवं सारणीयन

अध्याय 5 : विवेचना, निष्कर्ष एवं सुझाव (97-101)

संदर्भग्रंथ : (102-103)

परिशिष्ट : (104-118)